समकालीन कला के विकास में मृणालिनी मुखर्जी जी का योगदान

डॉ० आशीष गर्ग
एच०ओ०डी०
फाइन आर्ट विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड

ओम प्रकाश मिश्रा
शोधार्थी
फाइन आर्ट विभार्ग
मोनाड विश्वविद्यालय, हापुड
ईमेलः mishraop200@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० आशीष गर्ग,
ओम प्रकाश मिश्रा

समकालीन कला के विकास में मृणालिनी मुखर्जी जी का योगदान

Artistic Narration 2023,
Vol. XIV, No. 1,
Article No. 7 pp. 46-56

Online available at:
https://anubooks.com/journal/artistic-narration

सारांश

भारतीय समकालीन कला नित नए प्रयोग के लिए सदैव चर्चे में रहता है। किन्तु कुछ विशिष्ट कलाकार होते जिनके प्रयोग और रचनाधर्मिता अद्वितीय होती है। जिन्हे मुक्त हस्त से सभी स्वीकार करते हैं। ऐसे ही महान कलाकार मृणालिनी मुखर्जीहै जिनकी जुट की रस्सियों से निर्मित कलाकृतियों को देव प्रतिमा सामान मिलता है। आप की रचनाधर्मिता बंगाल की लोक शैलियों से प्रभावित है जो उस परम अमूर्त तत्व को मूर्त रूप में प्रस्तुत करती है। जो पारम्परिक और आधुनिक कलात्मकता का सुंदर संगम है। जैसा की हम सभी जानते है कि आधुनिक कला पर उस समय और परिस्तिथि का प्रभाव पड़ता ही है। मानव के विकाश में जितना योगदान वैज्ञानिक खोजो से हुआ है यह सत्य है किंतु मानव के जीवन में सौंदर्य और लालित्य कला और संस्कृति का ही परिणाम है। मात्र वैज्ञानिकता निरसता का बोध कराती है मानवीय नैतिकता और कलात्मकता आनंद का बोध करती है। यह सब कुछ मृणालिनी मुखर्जी जी के शिल्पो में स्वतः प्रगट होता है।

मुख्य बिन्दु

लोकशैली, समकालीन कला, जुट एवं रस्सी, लोक देवता, ग्रामीण, लोककला।

मृणालिनी मुखर्जी

भारत एक लोक प्रधान देश है जिसमें विविधता में अनेक एकता के गुण मिलते हैं। यही इसकी सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान है। भारत में कला समाज की उपजीव्या होती है। जिसमें समाज की जीवन दृष्टि, जीवन मूल्य, धर्म, विश्वास, निराशा वह अवसाद को आत्मसात की रहता है। उपरोक्त तथ्यों का अवलोकन कर चित्रकार अपनी कला को मूर्त स्वरूप प्रदान करता है। समाज की प्रदेश परिस्थिति का प्रभाव चित्रकला पर पड़ता है तथा इसका समग्र रूप से गढ़ी गई कृतियों में उनके कृति कारों पर पड़ता है। चित्रकार की नवनवोन्मेशनी प्रतिभा सभी को स्पष्ट कर देती है जिसके प्रभाव से कालजयी रचना का सृजन होता है। यह कृतियां गुप्त काल की समग्र व्याख्या करती हैं जिसमें संस्कृति इतिहास, धर्म–दर्शन, विश्वास के विपुल संकेत विद्यमान होते हैं। लोक कला पूर्ण रूप से हृदय का संगीत है ठीक इसी प्रकार समकालीन कला एवं समाज तर्क पर आधारित है। विश्लेषण, विचार विमर्श इत्यादि की युक्तियों से प्रभावित सृजन कार जब कला के विभिन्न आयामों का सर्जन करते हैं। वर्तमान में समकालीन कलाकार युक्ति तर्क के साथ समाहित कर अपने सृजन को नवीन आयाम लेते हैं। अतीत की कला परंपरा हो या लोक प्रतीकों का समकालीन कला में संपूर्ण देकर नवीन कला का सृजन करते हैं।

आधुनिक कला के परिपेक्ष में यदि कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति न होगी कि उक्त समय की कृतियों पर उस काल की परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ता है। किसी भी सभ्यता के विकास में जितना योगदान वैज्ञानिक तत्वों का है एवं युक्तियों का है उससे किंचित मात्र भी कम ललित कला एवं लोक कला का योगदान कम नहीं है। मात्र वैज्ञानिक समझ नीरसता को प्रोत्साहित करती है जिसमें माननीय नैतिक व कलात्मक युक्तियों का योगदान उसे आनंदमय बना देता है। मूल रूप से मृणालिनी मुखर्जी समकालीन मूर्तिकला जगत की प्रमुख मूर्तिकार हैं। आपकी कल आप बंगाल की लोक कला से प्रभावित है जिसमे जूट की रस्सी को अनेकानेक रूपा कारों में प्रदर्शित किया गया है। एवं नवीन सृजन को आत्मसात कर कला जगत में प्रस्तुत किया गया है। आपके माता–पिता प्रख्यात चित्रकार एवं मूर्तिकार रहे हैं। संपूर्ण परिवार की कला बंगाल कला से प्रभावित है। आपका परिवार पूर्ण रूप से कला के प्रति समर्पित परिवार है। अतः यह समझा जा सकता है कि आपका परिवार पूर्ण रूप से कलात्मक एवं लोक समर्पित है।

मृणालिनी मुखर्जी का जन्म 1945 में मुंबई में हुआ। आपके पिता विनोद बिहारी मुखर्जी एक विख्यात चित्रकार थे एवं माता लीना मुखर्जी एक मूर्तिकार के रूप में विख्यात थी। आप इन की इकलौती संतान थी। आपका स्वभाव बेहद प्रायोगिक था। साधारण शब्दों में कहें तो आप

मस्तमौला स्वभाव की थी किन्तु आप की जड़ें सदैव लोग तत्व तथा संवेदनशील से सराबोर रही किन्तु रचनात्मकता सदैव आधुनिकता से सराबोर रही और उन्हीं की तरफ उन्मुख रही। रचनात्मक प्रवृत्ति के साथ–साथ आपकी प्रवृत्ति में दयालुता का भाव उसमें चार चांद लगा देता है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा देहरादून में संपन्न हुई। स्कूल में पड़ने वाली छुट्टियों में आप की कलात्मक अभिरुचि आपको शांति निकेतन के रचनात्मक वातावरण की तरफ आकर्षित करती थी। जिस कारण वे प्रत्येक विद्यालय अवकाश में वहाँ जाया करती थी। प्रारंभिक शिक्षा हाई स्कूल के पश्चात अपने पिता की प्रेरणा से अपना बड़ौदा विश्वविद्यालय में कला की अकादमिक शिक्षा के लिए प्रवेश लिया। जहाँ ललित कला विभाग में आपको गुरु केजी सुब्रमण्यम से मुलाकात हुई। प्रारंभ में ही आप सुब्रमण्यम से प्रभावित थी जिसका प्रभाव आपके काम में भी देखा जा सकता है। आप अपने गुरु की भांति बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी। आपने माध्यम के रूप जूट को चुना। आपकी कला पर स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। जिस कारण बंगाल में सहज रूप से उपलब्ध होने वाली रस्सी जूट का प्रयोग अपने सृजनात्मकता के लिए किया।

इसके साथ–साथ सिरेमिक, तांबा, एवं टेराकोटा तथा एचिंग इत्यादि विद्याओं में कार्य किया है। किन्तु मुख्य रूप से आपने जूट के प्राकृतिक रेशों को जोड़कर अथवा गांठ लगाकर उन्हें एक शिल्प के रूप में प्रस्तुत किया जो देखने से मछुआरों के जाल की भांति प्रतीत होते हैं। आपके प्रयोग सदैव रूढ़िवादी प्रवृत्ति के लिए चुनौती रहे हैं। किन्तु लोक रूपों का सम्मान उन्हें सदैव याद रहा है। कलाकार के रूप में मृणालिनी मुखर्जी की कृतियां अपने भाव भंगिमा से कलाकार के सभी उद्देश्यों को मूक भाषा में पूर्ण कर देती हैं। यह अभिव्यक्ति उनकी निपुणता एवं कला साधना की गहराई को व्यक्त करती। आपके सृजित शिल्पों एवं कलाकृतियों के निर्माण स्थल हेतु दिल्ली, भोपाल, बड़ौदा, कोलकाता इत्यादि स्थान रहे हैं। आप के बनाए हुए कृतित्वों एवं मूर्ति शिल्पो को देवता के विग्रह जैसा सम्मान प्राप्त होता है किन्तु इन शिल्पो का आकार मंदिर में स्थित विग्रह से सर्वदा भिन्न है। यदि यह कहा जाए कि मृणालिनी मुखर्जी ने कला साधना एक भक्तों के रूप में की तो अतिशयोक्ति न होगी क्योंकि इस विद्या में धैर्य की परम आवश्यकता होती है जिसके अभाव में शिल्प सृजन असंभव हो जाता है। अपने शिल्पो के सृजन के लिए लंबे समय तक आपने गड़ी स्टूडियो दिल्ली में काम किया। स्टूडियो में विशेषकर एजिंग माध्यम में कार्य किया। यह कार्य काफी प्रायोगिक एवं सार्थक था। इसके साथ–साथ बड़ौदा में आपने लिथोग्राफ एवं काष्ट छापों पर भी कार्य किया।

आपको उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सन् 1971–78 में ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप प्राप्त हुई। साथ ही साथ पश्चिम में आपको रहकर स्वयं को कार्य को जानने एवं समझने का मौका मिला। पाश्चात्य देशों में आपको कलाकृतियों व उनकी रचना विधि की विविधता को जानने एवं समझने का पूर्ण मौका मिला। अपने चित्रों के विषय के रूप में आपने प्रकृति को

चुना। जिसमें देवी–देवता प्रमुख रूप से आपके शिल्पों के केंद्र बिंदु हैं। प्रकृति चित्रण को आधार बनाकर आपने उनके अवयवों एवं तत्वों को अपने छापा चित्रण का मुख्य बिंदु बनाकर प्रस्तुत किया। मुखर्जी के छिलकों में प्रयुक्त होने वाली रस्सी मुख्य रूप से बंगाल एवं गुजरात से आयात होती थी। आप के चित्रों एवं मूर्ति शिल्पों में कलात्मक दार्शनिक सौंदर्य दृष्टिगोचर होता है जिसमें हरे, बैंगनी, काले, नीले तथा सुनहरे अनेक रंगों की राशियों का प्रयोग कर अपने शब्दों को एक नवीन परिभाषा दी है। आपके शिल्पों में रहस्य आत्मकथा स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। आपका स्पष्ट मत है कि प्रत्येक कलाकार को अपना रास्ता खुद ही खोजना पड़ता है बस सवाल करने की दृष्टि काम करती है।

आपकी कृतियों में विशेषकर स्त्री संवेदना को स्वीकार कर उसे विशेष महत्व दिया है किन्तु एक स्त्री चित्रकार के रूप में सामान्य कार्यों को कम महत्व दिया है। आपका विश्वास इस्त्री चित्रकार के रूप में हर तरह के काम को महत्व देने के पूर्णतः विपरीत रहा। कलाकार का संबंध रचनात्मकता से ना कि लैगिक पहचान से। आपका कहना था कि एक स्त्री चित्रकार शिल्पकार के रूप में उन्हें कभी भी समस्या नहीं हुई। चाक्षुश कलाओं में आपकी दिलचस्पी विशेष थी। साथ ही साथ आपको सिनेमा देखने में विशेष दिलचस्पी रही है। अपने साथी कलाकारों में मृणालिनी मुखर्जी को दिलरुबा डिलू के नाम से प्रेम वश बुलाते थे। संगीत का शौक सामान्य रूप से आपको रहा है मात्र एक बाथरूम सिंगर की तरह यदि आप की कला प्रेरणा एवं दिलचस्पी की बात करें तो आपने अनेकानेक स्रोतों से प्रेरणा व प्रोत्साहन प्राप्त किया। विशेषकर महाबलीपुरम की कलाकृतियों एवं शिल्पों से आपने प्रेरणा ग्रहण की थी। आप की मूर्तियों में देव स्वरूपों की रचना है और यह सभी देव विग्रह उनके स्वयं के देवता हैं। जो उन्होंने स्वयं रचित किए हैं। अतः इस बात में किंचित मात्र भी संदेह नहीं है कि आप बहुमुखी कलात्मक प्रतिभा की धनी कलाकार हैं। जैसा की सर्वविदित है कि समाज की राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव समकालीन कला पर व्याप्त रहता है। उन कृतियों से सदैव प्रेरणा व स्फूर्ति प्राप्त होती है। जिनमें सृजनशीलता वे रचनात्मकता के साथ–साथ राष्ट्रीयता एवं सुधार की भावना को बना देता है। समकालीन कला सदैव प्रयोगवादी ता को बढ़ावा देती है तथा बंधनों का विरोध करती रही है। मृणालिनी मुखर्जी एकमात्र ऐसी कलाकार हैं जिनके मूर्ति शिल्प अद्भुत एवं विलक्षण है। जिन्हें शोध की आवश्यकता है। आपकी मृत्यु फरवरी 2015 में हुई। उक्त समय नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट ट्रांसफीग्रेशन नाम से इनके मूर्ति शिल्पों की प्रदर्शनी होने वाली थी। उक्त समय ही अचानक आप की तबीयत बिगड़ी वह आपको चिकित्सा हेतु चिकित्सालय में ले जाया गया किन्तु आप स्थूल जगत को छोड़ सूक्ष्म वास स्वीकार कर चुकी थी।

विशेष मूर्ति शिल्प शैली एवं तकनीक

आपकी मुख्यतः मूर्ति शिल्प शैली विशेष थी। जिसमें प्राकृतिक रेशों जूट के साथ–साथ इतालवी फ्रेस्को एवं अन्य कई पारंपरिक शैलियों का योगदान भी था। जिस प्रकार अजंता के चित्रों

में मानव एवं पादप सभी प्रकार के जीवंतता की एकता को बेहद कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जो आज भी विश्व कला जगत का श्रेष्ठतम उदाहरण है। इस ऐतिहासिक कला धरोहर में मानव अंगों की लालित्य पूर्ण भाव भंगिमा एवं मुद्राएं सभी कलात्मक अवयवों में नसर्गीक भाव उत्पन्न होता है जो हमें पादप जीवन चक्र की याद दिलाता है। यह कला पूर्ण रूप से कलात्मक एवं शोभनीयता से परिपूर्ण है। जिसमें किसी प्रकार का लांछन लगाना अशोभनीय होगा।

इसी प्रकार की गरिमामय लयात्मकता मृणालिनी मुखर्जी के शिल्प एवं कलाकृतियों में देखने को मिलती हैं। इन मूर्ति शिल्प ओके आकार बड़े एवं प्रभावशाली होते हैं। यह मोटे गांठ वाले त्रिआयामी प्रभाव को देखा जा सकता है। यह मूर्ति शिल्प पादप आदम के चित्रों एवं शिल्पों का आभास कराते हैं। यह प्रेषक एवं धर्म की निरंतरता हमें विक्रमोंर्वशी कृति एवं कृतित्व का स्मरण कराती है। जो महान साहित्यकार कालिदास की कृति है।

मृणाली जी कहती हैं कि मेरा प्रारंभिक काम अथवा कृति पूर्ण रूप से प्रकृति से प्रेरित था। जिस में फूल पत्ती, पेड़ पौधे इत्यादि आते हैं। आप का लालन–पालन जिस नगर एवं प्रांत में हुआ वहां के यह अभिन्न अंग थे। जिनसे मुझे बेहद लगाव है। धीरे–धीरे यह प्रक्रिया जटिल से जटिलतम की ओर अग्रसर हो गई। अब वह अमूर्तता की सहजता से विरक्त होकर स्वयं को मूर्त कर चुकी थी। जिसकी भाव भंगिमायें अनुमाप तथा अर्थ के संयोग से साधारण विशिष्ट हो गए तथा विशिष्ट अतिथि शिष्ट हो गए अर्थात उन मूर्ति शिल्प के आकारों की रचना हुई जिन्हें आज मृणालिनी जी सृजित एवं व्यवस्थित करती हैं। आपकी कृतियों में लय एवं विकास की परम संभावना कई सजन होता है। लय एवं विकास का सिद्धांत ही सभी जगह व्याप्त है। जो सुतली, जूट की रस्सी, डोरी इत्यादि के शिल्पों में सहजता से दिखता है। यह मूर्ति शिल्प जीवंत प्रतीत होते हैं किन्तु यह किसी भी प्रकार के बंधन से मुक्त हैं। इन मूर्तियों में रूप आकार एवं पोत टेक्चर में भी काफी विविधताएं हैं।

भारतीय सामाजिक परिवेश में व्याप्त झालर प्रणाली अथवा गांठ लगाने की पारंपरिक लोक शैली का ही अनुसरण किया। आपने पिको, फ्लैट नाट्स जैसी अनेक विधियों का प्रयोग अपने मूर्ति शिल्प के निर्माण में किया। गाँठदार धरातल पृष्ठ तथा आयतन में बदल जाते हैं। साथ ही साथ धातु के छल्लों का अवलंबन लेकर वह स्वयं को एक स्थिर अवस्था दे पाते हैं। कालांतर एवं समय की अवस्था में परिवर्तन के पश्चात् भी मूर्ति शिल्प ओके रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होते।

वन श्री तथा वन राजा मूर्ति शिल्प इसी प्रणाली के बनाए गए। यह स्वतंत्र रूप से स्वयं को खड़ा कर सकते हैं। आपके सृजित कार्यों में एक सहज लचीलापन देखने को मिलता है। संभवतः यही उसकी विशेषता है। यदि आकार के माध्यम से इन का अवलोकन करें तो इनमें विविधता एवं माधुर्य सहज भाव में उपस्थित रहता है। जो एक दूसरे से निकलते हुए आकारिक भाव प्रकट करते हैं। जो असामान्य रंगों में विकसित हुए प्रकट होते हैं। ऐसा लगता है कि यह एक बिन्दु से उत्पन्न हो स्वयं को एकत्रित करते हैं जो क्रमशः स्वयं को संपूर्णता में प्रकट कर देते हैं।

आपके कार्यों पर अंतर्राष्ट्रीय कला, लोक भाव, बौद्धिकता एवं अनुभव का संगम है। आपके द्वारा सृजित रूप आकार निश्चलता लिए हुए है। जिसमें व्यक्ति चित्र काश की अति यथार्थवादी अनुभूमि का सृजित स्वरूप है। आपकी कृतियां गरिमा पूर्ण है जो शब्द रहे थे मुंह भाषा में भावनाओं का हस्तांतरण करती हैं। जिनमें आकर्षक आकृतियाँ मनोविनोद युक्त तथा अनेक चुनौतियाँ प्रकट करती है। आपकी आकृतियों में चेतन एवं अवचेतन सभी प्रकार के धारणाओं का मिश्रण मिलता है। मृणालिनी को प्रारंभिक एवं ऐतिहासिक कला परंपरा के साथ विधाओं में सामान अधिकार प्राप्त था।

आपकी मुख्य तकनीकी विशेषता में से एक प्रमुखता थी जिसमें आपने बड़ी दक्षता के साथ काम किया और आप सफल रहे। आपकी तकनीकी रेखाचित्र, मॉडल, ब्रश इत्यादि से विरक्त थी। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समकालीन कला आलोचकों ने आपको समकालीन भारतीय कला की अंगूठी आवाज के रूप में व्याख्यानवित किया और उन पर समालोचक टीका टिप्पणी की। आपके मूर्ति शिल्प भांग झूठ की चमकदार रस्सियों से निर्मित एवं सृजित हैं। जिसका साम्य मिल पाना कठिन है। यह प्रकृति की उर्वरक क्षमता, सशक्त जीवन शक्ति, हरियाली को प्रतिष्ठित एवं परिभाषित करती है। आपके द्वारा सृजित कलाकृतियां बेहद कामुक एवं आकर्षक हैं। जिसमें आपने रहस्यमता को आत्मसात किया जो आप के शिल्पों का प्रमुख गुण है। जिसमें झूठ की गाँठो की भंगिमाएं एवं उनकी सलवटे क्षेत्रों का समूह, कृतियों की जटिलता एवं उनका पर्देनुमा प्रस्तुतीकरण स्वयं में अनेक मार्ग उत्पन्न करता है। यह स्पर्शनीय गुण धर्रा दर्शकों को आकर्षित कर विषय के साथ जोड़े रखता है।

मृणालिनी मुखर्जी ने अपने गुरु श्री केजी सुब्रमण्यम के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में काम किया। जिससे उनकी प्रतिभा दिन प्रतिदिन प्रखर होती चली गई। इस प्रभाव के बारे में सोनल खुल्लर ने मुखर्जी पर पड़ने वाले सुब्रमण्यम के प्रभाव को कुछ इस तरह से परिभाषित किया है। जूट लकड़ी, रस्सी, गाय के गोबर का सृजनात्मक प्रयोग कर चमत्कारिक जादुई वातावरण का निर्माण कर दिया। जिसमें आपका निवेश एवं अविष्कार शीलता व सृजनशीलता के सभी आयामों पर सुब्रमण्यम के कला निर्माण, लेखन एवं शिक्षण का प्रभाव प्रदर्शित होता है। कला के महान इतिहासकार एवं समालोचक दीपक अनंत ने भी मुखर्जी पर सुब्रमण्यम के प्रभाव को इंगित किया है।

जूट से बनी रुद्रा की मूर्तिकला

प्रभावित लोक शैली का प्रभाव

के०जी० सुब्रमण्यम के द्वारा प्रतिपादित शिक्षण एवं शिक्षा शास्त्र से मुखर्जी ने स्वयं के लिए पारंपरिक लोक रूपों को चुना। उच्च कला से उनकी सृजन शीलता विरक्त रही। यह प्रत्यक्ष रूप

से उन पर उनके गुरु के मार्गदर्शन का प्रभाव परिलक्षित होता है। उक्त गुण उन्हें आधुनिक समकालीन कला जगत के मुख्य ध्रुवीय पथ पर ले आया। भारत की पारम्परिक शिल्प कौशल एवं लोक कला अत्यंत समृद्ध एवं प्राचीन है। जिसमें सभी प्रकार के तत्वों का सम्मिश्रण स्वतः प्राप्त हो जाता है।

प्रमुख प्रदर्शनी एवं सार्वजनिक संग्रह

रुद्रा 1982 मृणालिनी मुखर्जी

मृणालिनी मुखर्जी की पहली एकल प्रदर्शनी 1972 में दिल्ली के श्री धरनी आर्ट गैलरी में आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी में रंगीन प्राकृतिक रेशों एवं जूटों से विनिर्मित बने हुए मूर्ति शिल्प ओं को प्रदर्शित किया गया है। जिससे आपने कला जगत में अलग विशिष्ट स्थान प्राप्त किया।

इन मूर्तिशिल्पों का नाम आपने उर्वरता के देवताओं के नाम पर रखा। जो उक्त समय में कला में क्रान्ति के रूप में देखा जाने लगा। जैसा कि पूर्व में भी उल्लेख है कि मृणालिनी मुखर्जी ने 1971 में मूर्तिकला के लिए ब्रिटिश काउंसिल की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की थी। जिस कारण आपको वेस्ट सरेकॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड डिजाइन में भेज दिया गया। यहाँ पर आपने कला की विभिन्न तकनीकों की शिक्षा व शिक्षा प्राप्त की थी। यहीं पर सन् 1978 तक आपने फाइबर की विभिन्न तकनीकों को आत्मसात कर उन्हें आगे बढ़ाया। इसके विपरीत आप के अधिकांश कार्यों का निर्माण ऋषियों के गुंथन से हुआ था। इन माध्यमों का उपयोग करने के पश्चात् उन्होंने सिरेमिक एवं कांस्य को अपने माध्यम के रूप में चुना और अनेक मूर्ति शिल्प ओं की रचना की।

जूट से बनी योगिनी की मूर्तिकला

आपका कांस्य में विनिर्मित कार्य 2000 के दशक में दर्शकों के मध्य आया तो इसका भी दर्शकों ने हृदय से स्वागत एवं अभिनंदन कर प्रणाली ने मुखर्जी को प्रोत्साहित किया। इस नवीन धातु मूर्ति शिल्प सृजन में आप ने पारंपरिक लुप्त होती मोम प्रक्रिया का उपयोग कर सीधे मोममेघालय हुए रूपों की धातु में ढलाई प्रारम्भ कर दी। इस प्रक्रिया में स्थानीय दन्त चिकित्सा में काम आने वाले औजारों का प्रयोग किया।

सन् 1994 ई० में डेविड इलियट द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के लिए आधुनिक कला संग्रहालय ऑक्सफोर्ड में आमंत्रित किया गया था। जो क्रमशः कई जगहों पर प्रदर्शित करते हुए यूनाइटेड किंगडम के अनेक शहरों में प्रदर्शित हुई। 1996 में नीदरलैण्ड में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में मुखर्जी ने प्रतिभाग किया। 2009 में मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट

ने मृणालिनी मुखर्जी की कृतियों का मरणोपरांत पूर्व व्यापी प्रदर्शन एवं सम्मान का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का मुख्य शीर्षक फेनोयेनल नेचर मृणालिनी मुखर्जी था।

इस प्रदर्शनी की समालोचना करते हुए महान समीक्षक नगीना शेख जी ने कहा था कि सभी प्रमुख इतिहासकारों का सबक है जो दर्शकों एवं आलोचकों ने प्राप्त किया है। यह निर्देशित है कि सभी कलाकार मुखर्जी की कृतियों से पूर्व व्यापी नवीनता की प्राप्ति करें। भारतीय कला कभी भी पश्चिम के सिद्धान्त का विरोध नहीं करती और ना ही पूर्व का अंधानुकरण ही करती है। अतः हम देखते हैं कि अनेक विशाल कार्य ना तो पूरी तरह से प्रतिनिधित्वात्मक है और ना ही पूरी तरह से अमूर्तता का वर्णन करती है। आपकी कला पूर्ण रूप से इतिहास एवं परंपरा से सीखता है और हमें शिक्षित करता है। आपकी सोलो प्रदर्शनी 2000 15 में पेरोनियल नेचर द मैट ब्रिज 2015 में ट्रांसफीग्रेशन नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट नई दिल्ली मैं आप की कृतियों को प्रदर्शित एवं प्रोत्साहित किया गया।

2013 में पालम स्पेस न्यू दिल्ली में नेचर मोर्ट नाम से आपकी एकल प्रदर्शनी आयोजित की गई साथ ही साथ इसी वर्ष कांस्य माध्यम में मुंबई में आपने जावेरी कंटेंपरेरी के नाम से प्रदर्शित किया।

2010 में स्पेस आर्ट गैलरी में आपने कार्य किया 2007 में बड़ोदरा आर्ट गैलरी नई दिल्ली में ब्रॉन्ज के मूर्ति शिल्प को प्रदर्शित किया।

2004 में नेचर मोर्ट आर्ट गैलरी नई दिल्ली में ब्रॉन्ज एवं फाइबर के मूर्ति शिल्प का प्रदर्शन किया।2001 में भी नेचर मोर्ट नई दिल्ली एवं साक्षी कला वीथिका मुंबई में अपनी कृतियों को प्रदर्शित किया।1997 ई० में वादेहरा आर्ट गैलरी में इन द गार्डन नामक शीर्षक से आपने चित्र प्रदर्शित किए।1996 में साक्षीगैलरी मुंबई और विदेश में यूरोपियनसिरेमिक वर्क सेंटर हेरटोगेनबोसम में आपकी कृतियों काप्रदर्शन हुआ। 1995 में ब्रिटिश काउंसिल गैलरी में आप की कृतियों को प्रदर्शित किया गया जिसमें दर्शकों की प्रतिक्रिया उत्साहवर्धक थी।

इस क्रम में सन् 1994 में मृणालिनी मुखर्जी की मूर्तियों एवं छिलकों की प्रदर्शनी म्यूजियम आफ मॉडर्न आर्ट, एक्सपोर्ट पिविलियन गैलरी, योकिशिर स्कल्पचर पार्क, ब्रिटेन हॉल, वेनफील्ड रोज फेस्टिवल हॉल गैलरी लंदन में आप की कृतियों का प्रदर्शन हुआ। सन् 1986 में पुण्डोल आर्ट गैलरी मुंबई 1985 में पन्थीयान ऑफ इमेजेशन नामक प्रदर्शनी ललित कला अकादमी नई दिल्ली में आयोजित एवं प्रदर्शित की गई। इस प्रकार सन् 1977 में पुण्डोल आर्ट गैलरी मुंबई, 1973 में त्रिवेणी आर्ट गैलरी नई दिल्ली, 1972 में सिद्धार्थनी गैलरी में एकल प्रदर्शनी की गई उक्त सभी प्रदर्शनी बेहद कामयाब प्रदर्शनी थी।उपरोक्त एकल प्रदर्शनी के अलावा आपने अनेक सामूहिक प्रदर्शनियों में भी प्रतिभाग

जूट से बनी वनदेवी की मूर्तिकला

किया जिसमें दो हजार अट्ठारह में कोची मुजिरिस विनाले कोची, 2015 में इंडियन आर्ट फेयर नई दिल्ली तथा यूनोर्थहोडॉग्स नामक प्रदर्शनी द जेविश म्यूजियम न्यूयॉर्क में प्रतिभाग किया। इस प्रकार सन् 2014 में बर्निंग डाउन द हाउस नामक प्रदर्शन आयोजित हुई जिसमें आपने अपनी मूर्ति शिल्पों को प्रदर्शित किया। सन् 2013 में द बॉडी इन इंडियन आर्ट ब्राउजर ब्रशलैस में आप की कृतियाँ प्रदर्शित हुई एवं 2012 में किरन नादर म्यूजियम नई दिल्ली में आयोजित प्रदर्शनी क्रॉसिंग टाइम अनफोल्डेड पार्ट 2 में आप की कृतियों को प्रदर्शित किया गया।

सन् 2008 में इंस्टिट्यूट वेलेकिंया द आर्ट मॉडर्न वेलेकिंया स्पेन में इंडियन मॉडर्ना नाम से प्रदर्शनी का आयोजन हुआ जिसमें आप की कृतियां भी प्रदर्शित हुई। साथ ही साथ इसी वर्ष त्रिशोल्ड आर्ट गैलरी नई दिल्ली ने मैपिंग मेमोरीज नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें मुखर्जी ने अपनी कृतियों के साथ प्रतिभाग किया।

सन् 2006 में ब्रेकली स्क्वायर गैलरी लंदन ने द आर्ट मील नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें आप की कृतियाँ प्रदर्शित थी। ठीक इसी वर्श आकार प्रकार कोलकाता ने भी आप की कृतियों को सामूहिक कला प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया। सन् 2001 बॉलीवुड लॉन्च अराइवल प्रोग्रेस टर्मिनल एमस्टरडम ने आप की कृतियों को प्रदर्शित किया। 1998 में साक्षी गैलरी मुंबई एवं कंटेंपरेरी इंडियन आर्ट के नाम से आपकी कृतियों को प्रदर्शित किया गया।

बाएं सेः बसंती 1984, यक्षी 1984,बर्ड 1985, रुद्र 1982, देवी, 1982

सन् 1996 में शिल्पायन नाम से एक प्रदर्शनी नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट नई दिल्ली ने आयोजित की जिसमें मुखर्जी की कृतियां प्रदर्शित थी। इसी प्रकार समकालीन भारतीय कला एवं संचयन नामक प्रदर्शनी फेस्टिवल ऑफ इंडिया रशिया में आयोजित हुई एवं एशिया पेसिफिक ट्रीनाले ऑफ कंटेंपरेरी आर्ट प्रदर्शनी क्वींसलैंड आर्ट गैलरी ब्रिशबैम में आयोजित की जिसमें आप की कृतियाँ प्रदर्शित हुई।

सन् 1995 में द अदर सेल्फ शीर्षक से एक प्रदर्शनी नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट नई दिल्ली ने आयोजित कर सामूहिक प्रदर्शनी में आपके कार्यों को प्रदर्शित किया सन् 1994 में नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट के सॉरी वर्षगांठ के उपलब्ध में आयोजित प्रदर्शनी में आपकी

भी कृतियां शामिल थी। साथ ही साथ 1991 में वर्ड्स एंड इमेज आर्टिस्ट अगेंस्ट कम्युनलिज्म नामक शीर्षक से आयोजित चित्र एवं शिल्प प्रदर्शनी में आप की कृतियाँ भी थी जिसे नेशनल गैलरी में प्रदर्शित किया। इसी प्रकार 1990 में नेशनल गैलरी आर्ट ने पूर्व में भी आप की कृतियों को प्रदर्शित एवं संवर्धित किया था।

सन् 1989 ई० मुंबई छत्रपति शिवाजी टर्मिनल में द टाइम्स ऑफ इंडिया एग्जिबिशन का आयोजन टाइमलेस आर्ट शीर्षक के द्वारा किया गया एवं इसी वर्ष ललित कला अकादमी नई दिल्ली के तत्वाधान में आर्टिस्ट अलर्ट शीर्षक से प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें आपने अपनी कृतियों कोप्रदर्शित किया।

1998 में जापान के मेरूगो म्यूजियम आफ आर्ट फेस्टिवल ऑफ इंडिया में आपके मूर्ति शिल्प प्रदर्शित हुए। इन सभी शिल्प प्रदर्शन के साथ 1987 में कंटेंपरेरी वूमेन आर्टिस्ट फेस्टिवल ऑफ इंडिया, द स्कल्पलेड इमेज बॉम्बे आर्ट फेस्टिवल मुंबई। 1986 में ओरिगीन्स ओरिजन्टली एवं बियांड सिडनी विनाले सिडनी, सेकंड विनाले ऑफ हवाना फर्स्ट विनाले ऑफ कंटेंपरेरी इंडियन आर्ट रूपांकन म्यूजियम भारत भवन भोपाल में आपकी कृतियों को प्रदर्शित किया गया।

1985 में सम एक्सपेक्ट ऑफ इंडियन आर्ट टुडे भारत भवन के तत्वाधान में आयोजित हुआ। जिसमें आपके कार्य प्रदर्शित थे।

आदि पुश्प– ।। 1998–99

1982 में फेस्टिवल ऑफ इंडियन कंटेंपरेरी आर्ट शीर्षक से एक प्रदर्शनी रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स लंदन में आयोजित की एवं ऑल इंडिया प्रिंट्स एग्जीबिशन का आयोजन गवर्नमेंट म्यूजियम ऑफ चंडीगढ़ में आपकी कृतियों का प्रदर्शन हुआ।

1981 में म्यूजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट ऑक्सफोर्ड यूके इतिहास मिथ एण्ड रियल्टी के नाम से ग्रुप शौकिया तथा ललित कला अकादमी नई दिल्ली में फिफ्त ट्रीनाले ऑफ कंटेंपरेरी आर्ट एवं रूपा म्यूजियम भारत भवन भोपाल में इनैगुरल एग्जिबिशन में आपकी कृतियों का प्रदर्शन हुआ।1980 में टम्पेरे में सारा हिडेन आर्ट म्यूजियम, पेरिस विनाले पेरिस एवं नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट लिस्बान ने एन्थोलॉजी ऑफ पेरिस विनाले नाइस शीर्शक ने प्रदर्शनों का आयोजन किया जिसमें आपकी उत्कृष्ट कृतियों का प्रदर्शन हुआ। 1978 में कुमार गैलरी नई दिल्ली में सिस्क हूँ डेक्लीनेड टू शो इन द ट्रिनाले में मुखर्जी की कृतियों को प्रदर्शित किया।

1989 में ललित कला अकादमी नई दिल्ली ने सिल्वर जुबली एग्जीबिशन ऑफ स्कल्पचर में आपकी कृतियों को प्रदर्शित किया।

संदर्भ ग्रन्थ

1. अग्रवाल, डॉ. गिर्राज किशोर. (2002). आधुनिक भारतीय चित्रकला. संजय पब्लिकेशन, शैक्षिक पुस्तकः आगरा।
2. (2006). भारत की समकालीन कला एक परिपेक्ष्य–प्राण नाथ मांगो. राष्ट्रीय पुस्तक न्यासः भारत नेहरू प्लेस।
3. द्विवेदी, डॉ. प्रेमशंकर. (2007). भारतीय चित्रकला कें विविध आयामल. न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू.: वाराणसी।
4. चतुर्वेदी, डॉ. मंजुला. (2009). भारतीय लोक कला के अभिप्राय. बी–33/83 ए–1 न्यू साकेत कॉलोनी बी.एच.यू. कॉलोनीः वाराणसी।
5. गुप्ता, डॉ. नीलिमा. (2010). भारतीय लोककला. स्वाति पब्लिकेशनः दिल्ली।
6. द्विवेदी, डॉ. प्रेमशंकर. (2011). भारतीय चित्रकला को बनाने की पद्धति. बी.एच.यू.: वाराणसी।
7. रानी, डॉ. अर्चना. संपादक. (2012). भारत की लोककलाएं. विजुअल आर्टः ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स पी.जी. कॉलेजः मेरठ, उत्तर प्रदेश।
8. भारद्वाज, विनोद. (2021). वृहद आधुनिक कला कोष. वाणी प्रकाशनः दरियागंज, नई दिल्ली।
9. चतुर्वेदी, डॉ. ममता. (2021). समकालीन भारतीय कला. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
10. गोस्वामी, राकेश. भारतीय आधुनिक एवं समकालीन कलाकार. गोस्वामी पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटरः गोविंदपुर, तेलियरगंज, प्रयागराज।

बेवसाइट्स

1. https://biharidhamaka.blogspot.com/2017/11/blog-post_10.html?m=1.
2. https://www.aryavartaindiannation.com/nation/challenges-of-contemporary-indian-art.
3. https://psartworks-in.translate.goog/2020/05/role-of-folk-tradition-in-india.html?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc.
4. https://m-thewire-in.translate.goog/article/culture/secular-deities-enchanted-plants-mrinalini-mukherjee-at-the-ngma?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc,sc